महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi VishwaVidyalaya, Wardha

(A Central University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

-::- प्रेस विज्ञप्ति -::-

भारतीय कवियों में भारतीय आख्यान की झलक रहती है: *प्रो. रजनीश शुक्ल*

प्रयागराज, दिनांक 20 मई 2021

आज दिनांक 20 मई को क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराजमहात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा यशस्वी कवि सुमित्रा नंदन पंत जी की 122 वी जयंती के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया इस संगोष्ठी में पंत जी की कविताओं के पाठ एवम वक्तव्य के माध्यम से उनके रचना संसार से नई पीढी को अवगत कराने का कार्य किया गया . कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की. कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ. वागीश शुक्ल ने मंगलाचरणके माध्यम से वाग्देवी का स्तवन किया और कवि सुमित्रानंदन पंत जी की

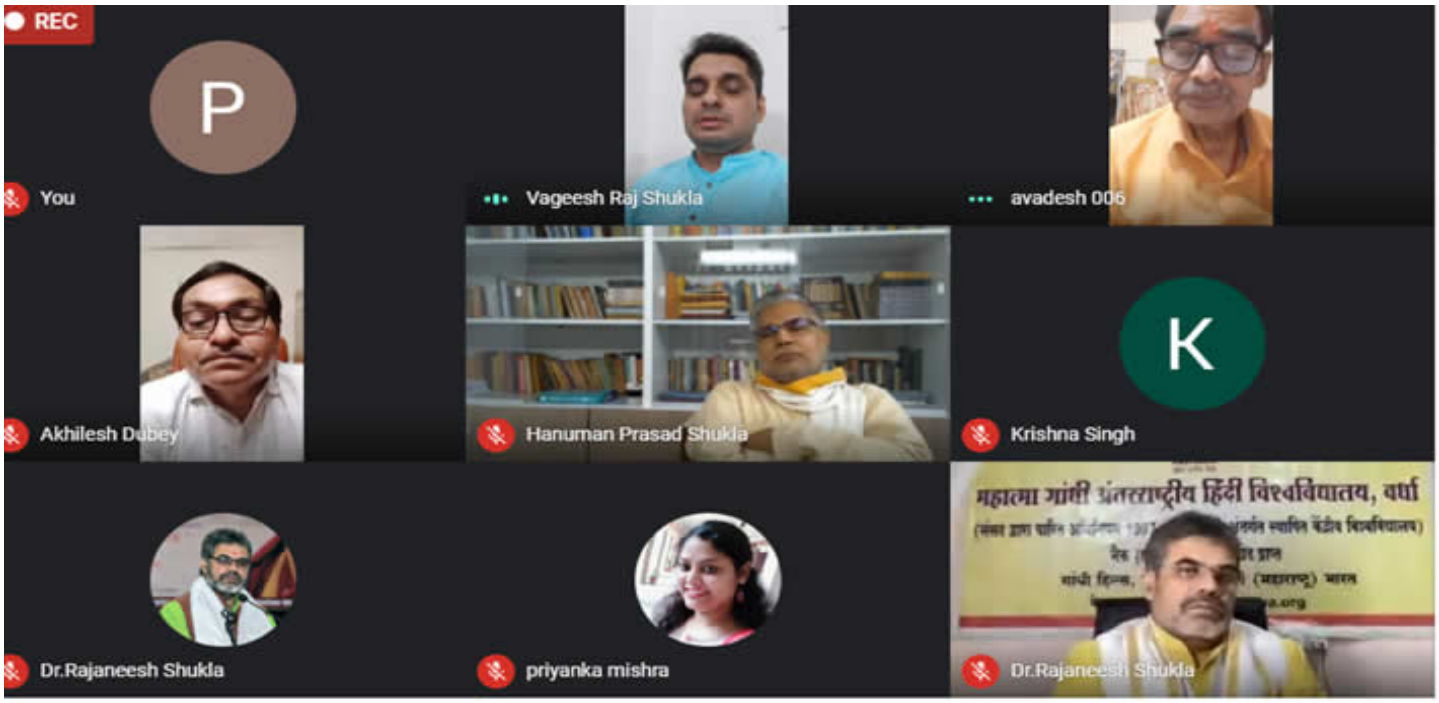

कविता का सस्वर पाठ भी किया. क्षेत्रीय केंद्र के अकादमिक निदेशक प्रो. अखिलेश दुबे ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया और अपने पुरखों को लगातार स्मरण करने की जरूरत पर बल दिया.

अध्यक्षीय उद्बोधन में माननीय कुलपति प्रो. रजनीश शुक्ल ने सुमित्रा नंदन पंत को भारतीय काव्य परम्परा के अंतर्गत समझने के प्रयास पर बल दिया. इसके लिये उन्होने अभिनव गुप्त की परम्परा का उदाहरण दिया. छंद के माध्यम से कुलपति महोदय ने पंत जी की कविताओं में स्वर ध्वनियों

की मर्यादा पर विस्तार से चर्चा की. उन्होने बताया कि कविता की चरम निष्पत्ति शांत रस की है, जो पंत की रचनाओं में अपने पूरे वैभव के साथ प्रस्तुत है. पंत नये भारत के नयी कविता की निर्मिति के कवि हैं. कुलपति महोदय ने 'स्वर्ण किरन' से कविता का पाठ भी किया. कुलपति महोदय ने इस ओर भी इशारा किया कि भारतीय कवियों में भारतीय आख्यान की झलक रहती है क्योंकि सभी एक परम्परा से जुडे हुए हैं. पंत की कविता में प्राकृत प्रकृति है ,प्रकृति सहचरी है.

साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अवधेश शुक्ल ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखते हुए सुमित्रानंदन पंत के लेखन पर प्रकाश डाला. उन्होने बताया कि सुमित्रानंदन पंत प्रकृतिके कवि है और उनकी रचनाओंमेंछायावाद की सभी विशेषतायें पायी जाती हैं. उनका महत्वपूर्ण ग्रंथ 'पल्लव'छायावाद का प्राण है. सुमित्रानंदन पंत विशाल प्रकृतिकी चेतना में खुद को विलीन करने वाले कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं. वह प्रकृति के चितेरेकवि हैं.

प्रति कुलपति प्रो. हनुमान शुक्ल ने पंत जी के रचना कर्म पर आलोचनात्मक दृष्टि डालते हुए बताया कि पंत जी आधुनिकता की पश्चिमी अवधारणा के अनुसार आधुनिकता के समर्थक नहीरहे . उनकी आधुनिकता में प्रकृति से प्रेम है. पंत जी के ऊपर अरविंद दर्शन का भी प्रभाव रहा. पंत जी अपने समय के प्रति सजग कवि थे. जो उन्होने देखा, समझा उस पर अपनी टिप्पणी जरूर प्रस्तुत की. पंत जी किसी वाद के दायरे में आने वाले कवि नहीं है, बल्कि वह वाद के दायरों का अतिक्रमण करने वाले कवि रहे हैं. पंत जी में प्रकृति और शिशु जैसी निर्दोषिता थी,जो उनकी कविताओं में झलकती है. प्रो. शुक्ल ने वक्तव्य के अंत में'शिशु' और 'द्रुत झरो'कविता का पाठ भी किया.

साहित्य विद्यापीठ से प्रो. कृष्ण कुमार सिंहने अपने वक्तव्य में पंत की कविताओं के साथ जन सामान्य के जुडाव की बात करते हुए बताया किपंतकी कविताओं से लोगों का बचपन में ही परिचय हो जाता है.प्रो.सिंह ने बताया कि खडी बोली के विकास में पंत जी का बहुत बडा योगदान है. उन्होने छायावाद में अपनी कविता में लाक्षणिक साहस दिखलाया है. पंत जी की चित्रमय भाषा इसका बडा प्रमाण है. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने छायावाद के कवियों में सबसे महत्वपूर्ण कवि के रूप में पंत जी की प्रतिष्ठा की है. प्रेमचंद के 1936 के एक वक्तव्य का हवाला देते हुए प्रो. कृष्ण कुमार ने बताया कि प्रेमचंद सौंदर्य की कसौटी को बदलने की चर्चा करते हैं.पर पंत जी इससे पहले ही सौंदर्य की कसौटी को बदलते हैं. उनकी रचनाओं का आधार हाशिये की दुनिया है. उनकी कविता में आध्यात्मिकता को लेकर बहुत आकर्षण था. उनकी रचनाओं में मानवता के हित की कामना है. ऐसे सम्वेदनशील कवि का झु काव दर्शन के प्रति स्वाभाविक है उन्होने पंत जी की 'सुख दुख ' कविता का भी पाठ किया और जीवन में संतुलन की बात की. इसके साथ साथ 'जीना अपने ही में'कविता का भी पाठ किया.

अंतिम वक्ता के रूप में डॉ. प्रियंका मिश्र ने कोविद काल जैसे कठिन समय में सुमित्रानंदन पंत की कविता'काले बादल'को आज के समय की प्रतिनिधि कविता कहा. उन्होने बताया कि पंत जी की 'काले बादल'कविताजीवन के प्रति मनुष्यके आशावादी दृष्टिकोण पर बात करती हैं. जीवन में आशा की किरण आने की सम्भावनाओं पर बात करती हैं. 'कालेबादल'कविता का उदाहरण देते हुए वह बताती हैं कि मनुष्य के जीवन में समस्यायें हमेशा नहीं रहती जैसे कि काले बादल हमेशा नहीं रहते. मनुष्य को संकटों के बादलों से हिम्मत नही हारनी है काले बादलों को चीर कर रोशनी की किरण मनुष्य तक आनी ही है. कष्ट का समय भी लोगों के साथ और हौसले से कट जायेगा.

कार्यक्रम के अंत में क्षेत्रीय केंद्र के अकादमिक निदेशक प्रो. अखिलेश दुबे ने सभी श्रोताओं और वक्ताओं के प्रति आभार ज्ञापित किया . कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऋचा द्विवेदी ने किया. इस अवसर पर प्रो. प्रीति सागर, डॉ. अवंतिका शुक्ला, डॉ. आशा मिश्रा, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. अमित रॉय, डॉ. अमरेंद्र शर्मा आदि अनेक शिक्षक,गैर शैक्षणिक कर्मी, शोधार्थी, विद्यार्थी उपस्थित थे.